NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

प्राकृतिक खेती: कृषि के लिए एक बेहतर आयाम

अवधेश कुमार

परिचय:

प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फ़सल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है। प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है। यह भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक कीटनाशक का उपयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार की खेती में जो तत्व प्रकृति में पाए जाते है, उन्हीं को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है। प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फ़सल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे- रॉक फास्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फ़सल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है।

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता:

1. पिछले कई वर्षों से खेतो मैं उपयोग होने वाले रसायनो कीटनाशकों से खेती में काफी नुकसान देखने को मिल रहा है। इसका मुख्य कारण हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग बढ़ता जा रहा हैं। भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बहुत बदलाव हो रहे है जो हमारे लिए काफी नुकसानदायक होते है। रासायनिक खेती से प्रकृति में और मनुष्य के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई है। किसानों की पैदावार का आधा हिस्सा उनके उर्वरक और कीटनाशको में ही चला जाता है।
2. किसान और अन्य व्यक्ति जो खेती में अधिक मुनाफा या फायदा कमाना चाहता है तो उसे प्राकृतिक खेती की तरफ अग्रसर होना चाहिए। खेती में खाने पीने की चीजे काफी उगाई जाती है जिसे हम उपयोग में लेते है। इन खाद्य पदार्थों में जिंक और आयरन जैसे कई सारे खनिज तत्व उपस्थित होते है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होती है। रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से ये खाद्य पदार्थ अपनी गुणवत्ता खो देते है। जिससे हमारे शरीर पर बुरा असर पड़ता है।
3. रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से भूमि की उर्वरक क्षमता खो जा रही है। यह भूमि के लिए बहुत ही

अवधेश कुमार
शोध विद्यार्थी, कृषि विस्तार विभाग,
बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय , बांदा , उत्तर प्रदेश

हानिकारक है और इससे तैयार खाद्य पदार्थ मनुष्य और जानवरों की सेहत पर बुरा असर डाल रहे है। रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से मिट्टी की उर्वरक क्षमता काफी कम हो गई। जिससे मिट्टी के पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ गया है। इस घटती मिट्टी की उर्वरक क्षमता को देखते हुए जैविक खाद उपयोग बहुत जरूरी हो गया है।

प्राकृतिक खेती का महत्व:

1. प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है। यह भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक कीटनाशक का उपयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार की खेती में जो तत्व प्रकृति में पाए जाते है, उन्हीं को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है।
2. प्राकृतिक खेती का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहा है, जिसका प्रमुख कारण है दुनिया भर में बढ़ती विभिन्न प्रकार की शारीरिक रोग, वायरस, महामारी और जिस प्रकार से कोरोना महामारी ने पुरे विश्व में स्वच्छता के साथ स्वस्थ जीवन शैली और शुद्ध खान-पान पर लोगों का ध्यान केंद्रित किया है, इससे प्राकृतिक आहार के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ी है और लोग स्वयं को रासायनिक खाद और कीटनाशक खेती से स्थानांतरण कर प्राकृतिक खेती से उत्पन्न हुए आहार का सेवन कर रहें हैं।
3. प्राकृतिक खेती की महत्ता का प्रमाण हम सबको भविष्य में और अधिक देखने को मिलेगा क्यूंकि किसी भी प्रकार का नाकारात्मक प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर इसके उपभोग से नहीं होता है। अगर किसान प्राकृतिक खेती करके उत्पादन करतें हैं तो इससे सम्बंधित बनने वाले प्राकृतिक उत्पाद भी होंगे और इसका परिणाम यह होगा की मनुष्य विभिन्न रोगों से दूर रहने के साथ स्वस्थ जीवन व्यतीत करेगा क्यूंकि 'प्राकृतिक स्वयं सर्वोत्तम उपचारक होती हैं।
4. प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फ़सल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे- रॉक फास्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फ़सल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता हैं।
5. .प्राकृतिक खेती सतत विकास को बढ़ावा देने वाली कृषि प्रणाली है। प्राकृतिक खेती को व्यवहार में लाकर जल और मृदा प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है। इसमें ऊर्जा के रूप में नवीकरणीय संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। यह ग्रीन हाउस गैसों के उत्पादन पर नियंत्रण रखने का कार्य करता है। इसके कारण जलवायु में स्थायित्व बना रहता है।

प्राकृतिक खेती के फायदे :

1. प्राकृतिक खेती भूमि की उत्पादन क्षमता को नष्ट होने से बचाती है और उसे बरकरार रखती है, जो की कृषि क्षेत्र के सतत विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
2. फसलों के उत्पादन के लिए प्राकृतिक खेती अपने स्त्रोतों को प्रकृति से हासिल कर लेता है, जिसके कारण प्राकृतिक खेती किसी भी प्रकार से महँगा नहीं होता है और साथ ही यह किसानों को अच्छी कमाई भी प्रदान करती है।
3. प्राकृतिक खेती की बढ़ती मांग के कारण यह भारत के किसानों के साथ भारत की अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगा क्यूंकि प्राकृतिक उत्पादों की मांग वैश्विक स्तर पर भी बढ़ चुकी है।
4. प्राकृतिक खेती पूरी तरह से रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से मुक्त होती है, जिससे पर्यावरण को नुक्सान नहीं पहुँचता है।
5. प्राकृतिक खेती पूर्ण रूप से प्राकृतिक स्त्रोतों पर केंद्रित होती है, जिसका नाकारात्मक प्रभाव मानव शरीर पर शुन्य हो जाता है, जिसके कारण मानव पौष्टिक भोजन और एक स्वस्थ जीवन का निर्वाह कर सकता है।

प्राकृतिक खेती की चुनौतियाँ:

1. *प्राकृतिक* ***खेती कम उत्पादकता प्रदान करता है, जिससे किसानों को बड़े पैमाने पर फसलों के उत्पादन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।***
2. .प्राकृतिक खेती में फसलों की उत्पादन बड़े पैमाने पर ना होने के कारण किसानों की आय में कमी आती है और साथ ही भारत की जनसँख्या के खाद्य की मांग को भी पूरा करने में कठिनाई आती है।
3. प्राकृतिक खेती से उत्पादित सब्जियां और फल ज्यादा महँगे होतें हैं क्यूंकि बाजार में इसकी मांग अधिक है और उत्पादन कम।
4. प्राकृतिक खेती सीमित उत्पादन का विकल्प प्रदान करती है और बेमौसमी फसलों का उत्पादन किसान प्राकृतिक में नहीं कर पातें हैं।
5. **प्राकृतिक** कृषि में कीट नियंत्रण के लिए प्राकृतिक तरीकों का प्रयोग किया जाता है जैसे- फसल रोटेशन, इंटरक्रॉपिंग और जैविक नियंत्रण विधियां। परन्तु ये प्राकृतिक उपाय सिंथेटिक कीटनाशकों की तरह प्रभावी नहीं हो सकते हैं। इन उपायों को कृषि कार्य में अपनाने से फसल को नुकसान हो सकता तथा फसलों की पैदावार भी कम हो सकती है।

निष्कर्ष:

प्राकृतिक खेती देश को बहुलाभ प्रदान कर सकती है, यह लोगों को शारीरिक रूप से, आर्थिक रूप से, पर्यावरण को सकारात्मक रूप से फायदा पहुचायेगा, जिस प्रकार प्राचीन काल के लोग प्राकृतिक खेती पर निर्भर रहकर

स्वस्थ और खुशनुमा जीवन व्यतीत करते थें। प्राकृतिक खेती एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है, जिससे कार्यात्मक जैव विविधता के इष्टतम उपयोग की अनुमति मिलती है।